(3) एयर के अनुसार दर्शन का कार्य

(क) भूमिका

एयर के अनुसार दर्शन का कार्य क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देना एक दृष्टि से बड़ा सरल है तथा दूसरी दृष्टि से बड़ा कठिन। यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि एयर के अनुसार दर्शन का कार्य एक प्रकार का विश्लेषण (Analysis) है जिसे वे दार्शनिक विश्लेषण कहते हैं (Philosophical Analysis)। किन्तु जब यह प्रश्न उठता है कि यह विश्लेषण कैसे होता है तो दो कठिनाईयाँ उपस्थित हो जाती है एक तो यह कि अनिवार्यतः इस विवेचन में तार्किक प्रश्नों में उलझना पड़ता है तथा दूसरा यह कि उन तार्किक स्थापनाओं का जब वास्तविक उदाहरणों में स्पष्टीकरण होता है तो कुछ विसंगतियाँ उत्पन्न हो ही जाती हैं। यही कारण हैं कि जब 1936 में एयर की पुस्तक 'Language, Truth and Logic' प्रकाशित हुई तो उसके चर्चित दार्शनिक विश्लेषण पर इतनी आपत्तियाँ उठायी गयीं कि एयर को पुस्तक के 1946 वाले संस्करण में कुछ भूल स्वीकारनी पड़ी और कुछ मत परिवर्त्तन भी करना पड़ा। हम इन सभी विवादों को पूर्ण स्पष्टीकरण तो पुस्तक की सीमा के कारण नहीं कर सकते, यह समझते हुए भी कि बना उन स्पष्टीकरणों के एयर के मत का पूर्ण विवरण संभव नहीं है। हम तकनीकी विवरणों में विना प्रवेश किये एयर के मत का एक सामान्य विवरण प्रस्तुत करने की चेष्टा करेंगे।

(ख) क्या दर्शन का कार्य नहीं है?

दर्शन का कार्य क्या है—यह जानने के पहले यह स्पष्ट कर लेना आवश्यक है कि एयर के अनुसार दर्शन क्या नहीं करता। एयर को लगता है कि दर्शन के कार्यों के संबंध में कुछ गलत धारणायें प्रचलित रही हैं जिसके कारण दर्शन के वास्तविक कार्य की समझ स्पष्ट नहीं हो पाती। अतः वे दर्शन के कार्य को उन प्रचलित धारणाओं से भिन्न कर लेते हैं।

एक ऐसी धारणा तो यही है कि दर्शन **मूलतः** तत्त्वमीमांसा है। एयर के तत्त्व-मीमांसा-निरसन से यह तो स्पष्ट हो गया कि दर्शन का कार्य तत्त्वमीमांसीय समस्याओं में उलझना नहीं है क्योंकि वह अन्ततः निरर्थक ही होगा। दर्शन के कार्यों के संबंध में एक प्रचलित धारणा यह भी है कि दार्शनिक चिन्तन या तो निगमनात्मक होता है या आगमनात्मक। एयर के लिए इस धारणा पर विचार अनिवार्य हो जाता है क्योंकि उन्हें स्वयं लगता है (एक स्थल पर उन्होंने स्पष्ट ऐसा कहा भी है) कि दर्शन तर्कशास्त्र का ही एक भाग है। एयर यह नहीं कहते कि निगमन (Deduction) तथा आगमन (Induction) का दर्शन के लिये कोई महत्त्व या प्रासंगिकता नहीं है। उनका कहना है कि इन दोनों धारणाओं के साथ कुछ ऐसा अंधविश्वास जुटा है जिससे दर्शन को मुक्त करना अनिवार्य है।

निगमनात्मक विधि पर जोर देने वाले विचारक अधिकतर यह मान कर अग्रसर होते हैं कि दर्शन कुछ मूल प्राथमिक आधारों (First Principle) को ढूढ़ लेता है जिसके आधार पर एक निगमनात्मक व्यवस्था बनाता है जिस व्यवस्था के द्वारा विश्व की व्याख्या होती है। वस्तुतः इन प्राथमिक आधारों (First Principle) को मान्यता देने का विचार इस विश्वास के साथ जुटा है कि दर्शन 'सत की सम्पूर्णता का अध्ययन है।' निगमनात्मक ढंग पर आधृत ऐसे विचार का एयर खण्डन करते हैं और कहते हैं कि इस प्रकार का कार्य दर्शन का कार्य नहीं है।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

उनके इस खण्डन का आधार मात्र यही है कि इस प्रकार के प्राथमिक आधार किसी प्रकार उपलब्ध हो ही नहीं सकते। एयर ने डेकार्ट के विचारों का उदाहरण लिया है। डेकार्ट के विचार में भी 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ'' (Cogito Ergo Sum) को इसी प्रकार के प्राथमिक आधार की मान्यता मिली है। एयर ने इसका विश्लेषण किया है जिस विश्लेषण का निचोड़ यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत है। एयर का कहना है 'Cogito' शब्द का वास्तविक अर्थ 'मैं सोचता हूँ' नहीं है—बल्कि यह है कि 'अभी विचार हो रहा है' क्योंकि अभी तो केवल विचार है 'मैं' की अवगति नहीं है और इससे—''अभी विचार हो रहा है' से 'मैं हूँ'' का निष्कर्ष नहीं निकलता। इस क्षण कुछ बिचार चल रहे हैं—इससे न यह आपदित है कि दूसरे क्षणों में भी विचार हुए हैं और न यही आपदित हैं कि विचारों का ऐसा क्रम चला है कि मैं—आत्मा की अवगति हो जाय। यही कारण है कि इस स्थल पर ह्यूम की आपत्तियाँ सटीक बैठती हैं। अतः डेकार्ट का यह दावा कि उन्हें कुछ प्राथमिक आधारों की तत्काल अवगति हुई है संगत नहीं है। किसी अर्न्तसूझ—किसी तात्कालिक अवगति से ऐसे प्राथमिक आधार नहीं मिलते।

कहा जा सकता है कि ऐसे प्राथमिक आधार प्रागनुभविक सत्य हैं। यदि प्राथमिक आधार प्रागनुभविक सत्य हैं, तो सभी प्रागनुभविक सत्यों के समान वे पुनरुक्ति मात्र (Tautology) हैं। और तब उनसे जो भी आपादित होगा पुनरुक्ति ही होगा। उनसे कोई तथ्य या आनुभविक कोई निगमनात्मक व्यवस्था नहीं बन सकती, यदि उनसे कोई निगमनात्मक व्यवस्था बनेगी तो वह पुनरुक्तियों का क्रम होगा—और तब यह कहना पड़ेगा कि सत् की व्याख्या पुनरुक्तियों के द्वारा होती है और यह बात बेतुकी होगी। एयर कहते हैं कि **दर्शन परिकल्पनात्मक चिन्तन** (Speculative Philosophy) नहीं है। परिकल्पनात्मक चिन्तन ही प्राथमिक आधारों तथा उस पर संरचित निगमनात्मक विचार-व्यवस्था का अम्बार खड़ा करता हैं, और इस प्रकार दर्शन को गुमराह करता है।

यही कारण हैं कि एयर स्पष्ट कहते हैं कि दर्शन परिकल्पनात्मक नहीं **समीक्षात्मक** (Critical) है। प्रश्न है कि इसकी समीक्षात्मकता किस ढंग की है।

एयर के अनुसार इस स्थल पर भी एक ऐसी प्रचलित धारणा है जो भ्रान्तिपूर्ण है और जिसका निराकरण करना अनिवार्य है। यह धारणा 'आगमन (Induction) पर जो हमारा सामान्य विश्वास है, उस विश्वास के कारण उत्पन्न होती है। यदि दर्शन समीक्षात्मक है तो प्रश्न उठता है कि दार्शनिक समीक्षा किसकी होती है—इस समीक्षा का विषय क्या है। कुछ विचारकों की धारणा है कि दार्शनिक समीक्षा का केन्द्र हैं वैज्ञानिक प्राक्कल्पनाएँ जिनपर हमारा दैनिक जीवन आधृत है। ऐसे विचारक परिकल्पनात्मक चिन्तन के समर्थक नहीं, बल्कि यह दावा करते हैं कि दार्शनिक चिन्तन विज्ञान तथा अनुभव से संबंधित है तथा उसका कार्य है वैज्ञानिक परिकल्पनाओं तथा दैनिक मान्यताओं का प्रमाण ढूँढ़ना। एयर के अनुसार यह धारणा भी गलत है क्योंकि इसके अनुसार तो दर्शन का कार्य यह जाँचना हो जाता है कि वैज्ञानिक प्राक्कल्पना अथवा दैनिक मान्यता वैध (Valid) है या नहीं है। पर संशय करें तो दर्शन हमें किसी प्रकार संन्तुष्ट नहीं कर सकता। एयर के अनुसार ऐसी प्राक्कल्पनाओं तथा सामान्य स्थापनाओं को प्रामाणिक रूप में स्थापित कर सकता है। एयर का कहना है कि आगमन का प्रचलित ढंग जिस रूप में वह सामान्यतः समझा जाता है—दार्शनिक समीक्षा की नींव नहीं बन सकता। वस्तुतः उस रूप में आगमन की समस्या

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

अर्थपूर्ण समस्या ही नहीं है। आगमन की समस्या यह दिखाने की समस्या है कि भूतकालीन अनुभवों पर आधृत कुछ अनुभविक सामान्यीकरण भविष्य में भी लागू होंगे। प्रश्न है कि इस सिद्धान्त को स्वीकारने का आधार क्या है? यह नहीं कहा जा सकता कि यह सिद्धान्त प्रागनुभविक सत्यों पर आधृत हैं, क्योंकि उस अवस्था में हम पुनरुक्ति से (प्रागनुभविक सत्य पुनरुक्ति से) एक तथ्यात्मक प्रतिज्ञप्ति को निकालने का दोष करेंगे। अब यदि हम यह कहें कि यह सिद्धान्त आनुभविक सिद्धान्त है—अनुभव आश्रित है तो हम चक्रक दोष से उलझ जाते हैं क्योंकि हमें जो स्थापित करना है वह पहले से स्वीकार लेते हैं। उदाहरणतः परम्परागत तर्कशास्त्र भी कभी-कभी कहता है कि आगमन में एक विचित्र विरोधाभास है। यह प्रकृति समरूपता नियम (Law of Uniformity of Nature) पर आधृत है, जब कि प्रकृति समरूपता नियम एक तरह से यही कहता है कि भूतकालीन अनुभवों के आधार पर हम भविष्य के विषय में कुछ प्राक्कथन दे सकते हैं—अर्थात् यह स्वयं आगमन को स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार कहते हैं कि आगमन का जो प्रचलित सामान्य रूप है, वह देना भी निरर्थक ही प्रयत्न होगा। एयर का कहना है कि दर्शन का संबंध वैज्ञानिक स्थापनाओं तथा दैनिक अनुभवों से है, किन्तु उसका कार्य उनका प्रामाण्य देना—सिद्ध-असिद्ध करना नहीं है। यह अवश्य है कि यदि कोई इन पर संशय करे या आपत्ति उठाये तो दर्शन यह बता सकता है कि इन विश्वासों के संगत असंगत होने का मापदण्ड क्या हो सकता है और यह भी बता सकता है कि किस प्रकार के अनुभव से उस प्रतिज्ञप्ति या स्थापना की सत्यता असत्यता स्थापित हो सकती है। दर्शन मात्र इतना बता सकता है कि किस प्रकार के अनुभव से प्रामाण्य प्राप्त हो सकता है। किसी विशेष उदाहरण में वैसे अनुभव होते हैं या नहीं—यह देखना दर्शन का कार्य नहीं है—यह तो शुद्ध अनुभविक प्रश्न है।

अतः एयर के अनुसार इतना तो स्पष्ट हो गया कि यदि कोई दर्शनशास्त्री अपने कार्य को अर्थपूर्ण ढंग से रूप देना चाहता है—यदि वह ज्ञान के क्षेत्र में अपने योगदान के लिये स्थान बनाये रखना चाहता है, तो उसे न परिकल्पनात्मक चिन्तन में उलझना है और न अनुभव आश्रित विश्वासों के लिये प्रागनुभविक आधार ढूँढने की चेष्टा करनी है। इस प्रकार के प्रयत्न निरर्थक प्रयत्न ही सिद्ध होंगे।

(ग) दर्शन का दार्शनिक विश्लेषण

अतः एयर के अनुसार दर्शन का कार्य विश्लेषण तथा स्पष्टीकरण है। इसी स्थल पर यह प्रश्न उठ जाता है कि दर्शन के इतिहास में क्या विश्लेषण ही होता रहा है? क्या यह सत्य नहीं कि दर्शन के इतिहास में सर्वाधिक चर्चा ऐसे ही विषयों की होती रही है जो तत्त्वमीमांसा के विषय हैं? एयर से पूछा जा सकता है कि क्या उस प्रकार के विचारक 'दर्शन' नहीं कुछ और कर रहे थे? यदि एयर दर्शन को एक नया कार्य सौंप रहे हैं तो क्या उनका उद्देश्य उन सभी विचारकों को दर्शन के क्षेत्र से बाहर रखना है?

एयर को इस प्रकार के संशय की अपेक्षा थी। उनका कहना है कि यह सत्य नहीं है कि दर्शन के इतिहास में अधिकांश विचारक तत्त्वमीमांसा में ही उलझे रहे हैं। ऐसी धारणा इसलिये बन जाती है कि बहुत से विचारक; जिनके विषय में यह धारणा है कि वे तत्त्वमीमांसक है, वस्तुतः अर्थपूर्ण दार्शनिक कार्य में लगे रहे हैं—विश्लेषण करते रहे हैं। उन्होंने 'लॉक' का उदाहरण लिया। वे दिखाते हैं कि वे सामान्य ज्ञान का समर्थन करते

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

हैं—किन्तु तत्त्वमीमांसक बन कर इनके लिये प्रागनुभाविक आधार ढूढ़ने का प्रयास नहीं करते। वे तो अपने निष्कर्षों को सामान्य-ज्ञान प्रतिज्ञप्तियों के विश्लेषण पर आधृत करते हैं। बर्कले के विषय में यह धारणा है कि वह तत्त्वमीमांसा के प्रत्ययवादी सिद्धान्त की स्थापना करता है किन्तु एयर दिखाते हैं कि उनके द्वारा द्रव्य का खण्डन-प्रयत्न अथवा जब वे प्रत्यक्ष की विवेचना करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि वे दार्शनिक विश्लेषण का ही कार्य कर रहे हैं। एयर, ह्यूम, होब्बस, वेन्थम जैसे ब्रिटिश विचारक और प्लेटो, अरिस्टौंटल, कांट आदि के विषय में भी कहते हैं कि इन सबों का दर्शनिक चिन्तन मूलतः विश्लेषणात्मक ही है। इस विवेचना का विशदीकरण यहाँ अनिवार्य नहीं है। यहाँ बस इतना समझना है कि एयर जब दर्शन का कार्य दार्शनिक विश्लेषण कहते हैं तो वे दर्शन के इतिहास को नकार नहीं रहे हैं। उनका दावा है कि जो दर्शन का मूल कार्य है, तथा जिस प्रकार का कार्य सभी दार्शनिक अर्थपूर्ण चिनतन में करते ही हैं, उसे वे स्पष्ट कर रहे हैं। वह कार्य दार्शनिक विश्लेषण ही है।

इस दार्शनिक विश्लेषण का स्वरूप क्या है? एयर कहते हैं कि 'विश्लेषण के स्वरूप के विषय में एक सामान्य भ्रान्ति है। कम से कम वैसे लोग जो अपने को तत्त्वमीमांसीय विचार की जकड़ से मुक्त नहीं कर पाते, ऐसा ही सोचते हैं। उनके अनुसार 'विश्लेषण' 'विभाजन' की प्रक्रिया है। **अणुवाद** जैसा तत्त्वमीमांसीय दर्शन इसी प्रकार के विभाजन की बात करता है। किसी वस्तु का विभाजन उसके छोटे भागों में तब तक होता जाय जब तक मूल विशेष (Basic Particular) न मिल जाय—और जिसका और विभाजन न हो सके। इसे ही विश्व का अणु माना जाता है जिससे जगत संरचित है। इसी प्रकार के विश्लेषण को ध्यान में रखकर हर प्रकार के विश्लेषण के विरुद्ध आपत्ति उठायी जाती है। कहा जाता है कि इस प्रकार का विश्लेषण सम्पूर्णता का अयथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है, क्योंकि संपूर्णता भागों का योग मात्र नहीं है—उसकी सम्पूर्णता की विशिष्टता हैं जो भागों को केवल यन्त्रवत जोड़ देने से प्राप्त नहीं होती।

एयर का कहना है कि जब वे विश्लेषण की बात करते हैं, तो उनका तात्पर्य ऊपर चर्चित विश्लेषण से सर्वथा नहीं है उन्हें अवगति है कि हर सम्पूर्णता के हर अवयव हर दूसरे के साथ किसी न किसी प्रकार संबद्ध रहते हैं। वस्तुतः एयर के अनुसार विश्लेषण भौतिक विभाजन-प्रक्रिया है ही नहीं, इसका संबंध वस्तुओं के भौतिक लक्षणों से है ही नहीं। विश्लेषण **का संबंध हम वस्तुओं के विषय में जो बात करते हैं—उन कथनों से है।**

अतः जब एयर कहते हैं कि दर्शन का कार्य विश्लेषण है, तो उनका तात्पर्य है कि दार्शनिक प्रतिज्ञप्तियाँ तथ्यात्मक नहीं होती भाषीय (linguistic) होती हैं। वे भौतिक या मानसिक वस्तुओं-घटनाओं अवस्थाओं आदि का विवरण नहीं देती हैं। वे एक प्रकार से परिभाषायें व्यक्त करती हैं तथा जो परिभाषाओं से आकारिक रूप में निकल आता है वैसी प्रतिज्ञप्तियाँ देती हैं। इस दृष्टि से एयर के अनुसार दर्शन तर्कशास्त्र का एक विभाग जैसा है क्योंकि तर्कशास्त्र परिभाषाओं के आकारिक परिणामों का ही अन्वेषण करता है। यही कारण है कि दर्शन और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। दार्शनिक विश्लेषण को आनुभविक मान्यताओ को स्वीकारने-अस्वीकारने की आवश्यकता नहीं है। यह शुद्ध आकारिक विश्लेषण है। उलझनें इस कारण उत्पन्न होती हैं कि वैसी प्रतिज्ञप्तियाँ जो वस्तुतः भाषीय हैं, इस प्रकार से व्यक्त की जाती हैं कि प्रतीत होता है

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

कि वे तथ्यात्मक हैं। जैसे व्याघात-नियम को इस रूप में व्यक्त किया जाता है—कोई वस्तु एक ही समय दो स्थान पर नहीं रह सकती' किन्तु वस्तुतः यह तार्किक कथन है—यह किसी अनुभविक वस्तु के विषय में कथन है ही नहीं। भाषीय प्रयोगों तथा चलन के कारण इससे ऐसी भ्रान्ति उत्पन्न हो जाती है। एयर का कहना है कि दर्शन शास्त्र में इस प्रकार के अनेकों स्थान दे दिये गये हैं—और इसी कारण यह भ्रन्ति उत्पन्न होती है कि दर्शनशास्त्रीय प्रतिज्ञप्तियाँ अनुभविक प्रतिज्ञप्तियाँ हैं। [स्मरण रहे कि कारनैप ने भी ऐसे ही संदर्भ में अर्द्ध-विन्यासात्मक प्रतिज्ञप्ति (Pseudo-Syntactical Proposition) तथा विन्यासात्मक वाक्य (Syntactical Proposition) का भेद किया था।]

अतः एयर के अनुसार दार्शनिक विश्लेषण एक प्रकार की भाषीय परिभाषाएँ देता है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि दर्शन का लक्षण एक प्रकार का शब्द-कोष बनाना है। **पयायीर्थक परिभाषा** (Explicit Definition)देना है। दर्शनशास्त्र में जिस प्रकार की परिभाषायें मिलती हैं उन्हें **प्रयोगनिष्ठ परिभाषा** (Definition in Use) कहा जा सकता है। हम किसी शब्द या शाब्दिक प्रतीक की पर्यायवाची परिभाषा तब देते हैं जब हम उस शाब्दिक प्रतीक के स्थान पर दूसरा शब्द देते हैं और कहते हैं कि दोनों उक्तियाँ समानार्थी हैं। हम दो शब्दो को समानार्थक (Synonymous) तब कहते हैं जब किसी भाषा के किसी अर्थपूर्ण वाक्य में उस शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द रख देते हैं तो जो वाक्य बनता है वह पहले वाक्य के सर्वथा समतुल्य (equivalent) हो। अंग्रेजी भाषा में 'Oculist' शब्द के लिये 'eye-doctor' शब्द का व्यवहार **पयार्याथक** परिभाषा दे देगा क्योंकि अंग्रेजी भाषा के किसी वाक्य में जहाँ 'Oculist' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ उसके स्थान पर eye-doctor' शब्द के रखने से जो वाक्य बनेगा वह पहले वाक्य के समतुल्य होगा। एयर का कहना है कि सामान्यतः दैनिक जीवन में हम प्रायः इसी प्रकार की पर्यायार्थक परिभाषा देते हैं।

किन्तु प्रयोगनिष्ठ परिभाषा (Definition in Use) ऐसी परिभाषा नहीं है। जिसमें पर्यायवाची शब्दों की खोज नहीं होती बल्कि इसमें तो जिस शब्द की परिभाषा दी जाती है उसके पर्यायवाची शब्दों का उपयोग नहीं होता। इसमें तो यह दिखलाया जाता है कि जिस वाक्य में इन शाब्दिक प्रतीको का व्यवहार हुआ है, उन्हें ऐसे वाक्यों में रूपान्तरित किया जा सकता है जो दिये हुए वाक्यों के समतुल्य भी हो और जिसमें न दिये हुए शब्द, न उसके पर्यायवाची शब्दों का व्यवहार हुआ। एयर के लिए यह एक बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। उनके अनुसार दर्शनशास्त्र में जब प्रयोगनिष्ठ परिभाषा देने का प्रयत्न होता है तो शाब्दिक प्रतीकों के पर्यायवाची शाब्दिक प्रतीकों का आवश्यकता नहीं है, वह तो एक प्रकार से एक तार्किक अनुवाद प्रक्रिया है। जिसकी प्रयोगनिष्ठ परिभाषा देनी है उनका प्रयोग जिस वाक्य में हुआ है उस वाक्य का अनुवाद अन्य वाक्य या वाक्यों में करना है, वह भी इस प्रकार कि नये वाक्यों में वह शाब्दिक प्रतीक था उसके पर्यायवाची शब्द न रहे—फिर भी नये वाक्य दिये हुए वाक्य का समतुल्य अनुवाद हो (Equivalent Translation)

इस प्रकार के प्रयोगनिष्ठ परिभाषा के उदाहरण की खोज में एयर के मत में 1936 तथा 1946 में अन्तर पड़ जाता है। 1936 में दार्शनिक विश्लेषण के उदाहारण के रूप में उन्होंने रसेल के विवरण सिद्धान्त(Theory of Descriptions)का उदाहरण लिया है, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि प्रयोगनिष्ठ परिभाषा की कल्पना में उनके मन में रसेल का यह सिद्धान्त प्रतिमान-दृष्टांत (Paradigm) के रूप में था। उन्होंने रसेल के 'स्काट वैभरली का रचयिता

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

है' के विश्लेषण का उदाहरण लिया है। हमने रसेल के अध्ययन में यह देखा है कि इस विश्लेषण में रसेल इस वाक्य को ऐसे वाक्यों में अनुदित करते हैं जिनमें 'वैभरली का रचयिता' या उसकी पर्यायवाची कोई उक्ति नहीं रहती, फिर भी इन वाक्यों में दिये हुए वाक्य का समतुल्य अनुभव हो जाता है। यही एयर के प्रयोगनिष्ठ परिभाषा का भी विवरण है।

किन्तु 1936 में इसके प्रतिपादन के पश्चात इस पर अनेकों आपत्तियाँ उठीं। फलतः 1946 में जब पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ तो एयर ने उसकी भूमिका में कुछ स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया। उस स्पष्टीकरण में एयर ने यह नहीं कहा कि विवरणात्मक वाक्यों का रसेल वाले विश्लेषण का उदाहरण दार्शनिक विश्लेषण का उदाहरण नहीं है। उन्होंने इतना अवश्य स्वीकारा कि दार्शनिक विश्लेषण के स्वरूप के प्रारंभिक प्रतिपादन से यह धारणा बनती है कि दार्शनिक विश्लेषण **केवल** (मात्र) प्रयोगनिष्ठ परिभाषा देता है जो 'स्काट वैभरली का रचयिता है' के विश्लेषण जैसा है। (1946 में एयर यह स्वीकारते हैं कि 'दार्शनिक विश्लेषण' और प्रयोगनिष्ठ परिभाषा का सर्वथा एकरूप कर देना गलत था। बल्कि उन्हें यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके अर्थ में दार्शनिक विश्लेषण में कुछ ही उदाहरणों में प्रयोगनिष्ट परिभाषा मिल सकती है अधिक उदाहरणों में नहीं। वस्तुतः उस उदाहरणों में भी क्या हुआ है? स्काट वैभरली का रचयिता है'' का विश्लेषण रसेल करते हैं—''कम से कम एक व्यक्ति ने वैभरली लिखा,'' अधिक से अधिक एक व्यक्ति ने वैभरली लिखा', ''जिसने वैभरली लिखा वह स्काट था। वहाँ भी वस्तुतः वैभरली का रचयिता की परिभाषा देने का प्रयत्न नहीं हुआ। बल्कि यहाँ भी यह दिखाया जा रहा है कि विभिन्न प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों के बीच पारस्परिक संबंध क्या है, तथा इस विश्लेषण के फलस्वरूप दिये हुए वाक्य का अवबोध अधिक स्पष्ट हो जाता है।

अतः अब एयर का कहना है जब वे कहते हैं तर्क दार्शनिक विश्लेषण प्रयोगनिष्ठ परिभाषा देने का प्रयन्त करता है, तो उनका वास्तविक तात्पर्य यह है कि दार्शनिक विश्लेषण से विभिन्न प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों का आपसी संबंध स्पष्ट होता है। किसी-किसी संबंध में हो सकता है कि जिसका विश्लेषण हो रहा है, उसकी प्रयोगनिष्ठ परिभाषा स्पष्ट हो जाय किन्तु वस्तुतः यह विश्लेषण एक ऐसी तार्किक व्यवस्था (Scheme) प्रस्तुत करता है जिससे दो विभिन्न प्रकार की प्रतिज्ञप्तियों का संबंध इस प्रकार दिखाया जा सके कि उसमें अधिक स्पष्टता प्रतीत हो। इस प्रकार के उदाहरणों को लेकर यह दिखाया जा सकता है कि कैसे इस प्रकार का संबंध—निर्देश दार्शनिक दृष्टि से ज्ञानवर्द्धक है, तथा वैचारिक स्पष्टता का साधन है। वस्तुतः एयर के अनुसार इस प्रकार के विश्लेषण का लक्ष्य है **'विश्लेषित वाक्य का स्पष्टतर अवबोध प्रस्तुत करना'**।

अब इसे एयर के उदाहरण से स्पष्ट करें। कहा जा सकता है कि किसी भी भौतिक वस्तु—उदाहरणतः मेज—के संबंध में दी गयी प्रतिज्ञप्ति का विश्लेषण इन्द्रिय-प्रदत्तों के संबंध में दी गयी प्रतिज्ञप्तियों के द्वारा की जा सकती है। एयर ने भौतिक वस्तुओं संबंधी कथनों का वृहत रूप में विश्लेषण किया है। किसी एक भौतिक वस्तु के संबंध में दृष्टि, स्पर्श, स्वाद, श्रवण आदि विभिन्न इन्द्रिय-आश्रित प्रदत्तों से संबंधित कथन दिये जा सकते हैं। एयर ने उन उदाहरणों में विश्लेषण का स्वरूप और उसकी उपयोगिता को स्पष्ट किया है। यहाँ हम स्थानाभाव के कारण उतने वृहत-विवेचन में प्रवेश नहीं कर सकते। हम यहाँ सामान्य ढंग से भौतिक वस्तु कथनों का इन्द्रिय-प्रदत्त प्रतिज्ञप्तियों में विश्लेषण के उदाहरण को समझने का प्रयास करेंगे।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

'यह एक मेज हैं'—इस कथन का विश्लेषण कैसे होगा? एयर की प्रयोगनिष्ठ परिभाषा के विवरण के अनुसार इस वाक्य को ऐसी प्रतिज्ञप्तियों में विश्लेषित करना है जिनमें 'मेज' या उसका कोई पर्यायवाची शब्द न आये, फिर भी वे प्रतिज्ञप्तियाँ 'यह एक मेज है' का समतुल्य अनुवाद हो, ऐसा करने में कुछ मेज के इन्द्रिय प्रदत्त प्रतिज्ञप्तियाँ निकल आयेंगी। इसी कारण कुछ विचारक कहते भी हैं कि 'मेज' कुछ इन्द्रित प्रदत्तों के द्वारा संरचित तार्किक संरचना है (Logical Construction)। लेकिन विश्लेषण से इतना स्पष्ट होता है कि 'यह एक मेज है' और विश्लेषित प्रतिज्ञप्तियाँ एक दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं। उन प्रतिज्ञप्तियों से 'यह एक मेज है' की पर्यायार्थक परिभाषा नहीं मिलती बल्कि मेज-संबंधी कथन तथा इन्द्रिय-प्रदत्त सम्बन्धी कथनों का आपसी संबंध स्पष्ट होता है। इसके चलते 'यह एक मेज है' कथन का अवबोध अधिक स्पष्ट होता है। किसी भौतिक वस्तु जैसे 'मेज' का स्वरूप क्या है, इस विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है—सामान्य ढंग से ही—कि दो भिन्न इन्द्रिय-प्रदत्त संबंधी कथनों का आपसी संबंध यह स्पष्ट करता है कि कैसे वे दोनों एक ही मेज के गुणों को व्यक्त करते हैं, और यही मेज के अवबोध को अधिक स्पष्ट करता है। यही कारण है कि प्रत्यक्ष की समस्या के समाधान में भौतिक वस्तु संबंधी कथनों को इन्द्रिय प्रदत्त संबंधी प्रतिज्ञप्तियों में अनुवाद किया जाता है। एयर उसमें इतना और कह देते हैं कि स्मरण यह रखना है कि ये सभी प्रतिज्ञप्तियाँ आनुभविक नहीं हैं—भौतिक वस्तु मेज तथा भौतिक इन्द्रिय-प्रदत्त लक्षण को सूचित नहीं करतीं बल्कि भाषीय प्रतीकों के संबंधों को सूचित करती हैं। इन भाषीय-संबंधों का स्पष्टीकरण दार्शनिक विश्लेषण का लक्ष्य है।

अतः दार्शनिक विश्लेषण में दो बातों पर ध्यान रखा जाता है। प्रथमतः तो यह बताना आवश्यक है कि जिस भाषा में विश्लेषण हो रहा है उसमें कौन-कौन प्रकार के वाक्य अर्थपूर्ण हैं। और उसके बाद यह देखना है कि किस रूप या अवस्था में एक प्रकार के वाक्य दूसरे प्रकार के वाक्यों के समतुल्य (equivalent) होंगे। यहाँ इतना स्मरण रखना अनिवार्य है कि दो शाब्दिक प्रतीक एक प्रारूप (Type) के तभी होंगे जब किसी भी अर्थपूर्ण वाक्य में एक प्रतीक के स्थान पर दूसरे प्रतीक को रखा जा सके। वह भी इस प्रकार कि इसके चलते अर्थपूर्ण वाक्य उसी प्रकार अर्थपूर्ण रहे, अर्थहीन न हो जायँ। उसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि दो वाक्य एक ही प्रकार के होंगे जब एक में व्यवहृत शाब्दिक प्रतीक के अनुरूप उसी प्रकार (Type) का शाब्दिक प्रतीक दूसरे में भी हो। समतुल्यता का यह मापदण्ड हमें एक आधार दे देता है जिससे हम एक प्रकार के कथनों का विश्लेषण उसके समतुल्य प्रतिज्ञप्तियों में कर सकें।

एयर का दावा है कि जहाँ इस प्रकार का समतुल्यता निर्देश संभव होता है, वहाँ उस भाषा की वास्तविक संरचना (Structure of Language) स्पष्ट होती है। रसेल की विवरण-प्रणाली से एक प्रकार से अंग्रेजी की संरचना स्पष्ट होती है। रसेल की प्रणाली से तो अंग्रेजी की संरचना में निहित अनेकार्थकता की संभावना भी स्पष्ट हो जाती है। जब हम भाषीय प्रतीकों को सूचित करने वाले चिह्नों के बाह्य रूप पर ही ध्यान देते हैं—उन प्रतीकों में निहित निर्देश पर नहीं, तो अनेकार्थकता की संभावना बन आती है। दार्शनिक विश्लेषण इसे भी स्पष्ट कर देता है। जैसे अंग्रेजी के (Is) शब्द का प्रयोग हुआ है, किन्तु हम केवल 'है' के बाह्य रूप पर ध्यान दें तो दोनों वाक्य एक प्रकार के बन जायेंगे। विश्लेषण 'है'

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

में निहित निर्देश को पकड़ इन वाक्यों का समतुल्य (equivalent) वाक्य दे सकता है। पहले वाक्य का समतुल्य वाक्य है 'किसी और ने नहीं उसने वह पुस्तक लिखी'। दूसरे वर्ग का समतुल्य वाक्य है 'बिल्ली का वर्ग स्तनपायी प्राणियों के वर्ग के अन्तर्गत है'। इस विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि 'है' शब्द के व्यवहार करने पर भी दोनों वाक्य दो प्रकार के हैं। इस प्रकार एयर का कहना है कि इस विश्लेषण से अस्पष्टता की संभावना को भी हटाया जा सकता है।

एयर यह भी स्पष्ट करते हैं कि हमें यह नहीं कहना चाहिये कि दार्शनिक विश्लेषण प्रतीकों तथा प्रतिज्ञप्तियों के अर्थ (meaning) से संबंधित है। विश्लेषण अर्थ की उपेक्षा नहीं करता, किन्तु यह अर्थ का अन्वेषण नहीं है। 'अर्थ' शब्द अपने में अनेकार्थक है, इसका एक साहचर्य ऐसा भी है कि अर्थ की खोज एक आनुभविक समस्या (empirical problem) बन जाती है, विश्लेषण तार्किक अन्वेषण है—अर्थ की प्रासंगिकता संदर्भानुसार हो सकती है; इसके लिये अनिवार्य नहीं है। यही कारण है कि **विश्लेषण से यह ज्ञात नहीं होता कि किसी प्रतीक का वास्तविक प्रयोग क्या है**। यह भी एक अनुभव-आश्रित समस्या है, तार्किक समस्या नहीं। विश्लेषण जो प्रयोग कथनों में प्रतिज्ञप्तियों में—हुआ है उसी का स्पष्टीकरण करता है। विश्लेषण तार्किक क्रिया है—आनुभविक अध्ययन नहीं।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner